उषा देवी मित्रा : वैविध्यमय जीवन की चितेरी

✍ कुमुद शर्मा

बंग महिला की 'दुलाईवाली' कहानी के साथ हिंदी कहानी में महिला कथाकारों की जिस सशक्त परंपरा का प्रारंभ हुआ उस शृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं उषा देवी मित्रा। प्रेमचंद युगीन महिला कथाकारों में अग्रणी उषाजी ने अपनी मौलिक प्रतिभा द्वारा हिंदी कथा साहित्य को वैविध्यमय रूप दिया। बँगला की कल्पनामयी कोमल भावुकता को साथ लिये हिंदी कथा साहित्य में कदम रखनेवाली उषाजी ने वस्तु संगठन और शैली में रवींद्रनाथ और शरत् जैसे बँगला कथाकारों का प्रभाव ग्रहण करते हुए और जीवन का चित्र उतारने में प्रेमचंद का अनुकरण करते हुए भी अपनी मौलिकता द्वारा हिंदी कहानी को नयापन दिया। जीवन के सहज और स्वाभाविक प्रवाह में अपनी रचनाओं की कथा-वस्तु और अनुभव-वस्तु तलाशी। संगीतशास्त्र की पृष्ठभूमि पर कथा का ताना-बाना बुननेवाली उनकी रचनाएँ जीवन की वैविध्यमय अभिव्यक्ति, अनुभव-वस्तु की नवीनता और वस्तु संगठन की मौलिकता के कारण हिंदी कथा साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

उषाजी का जन्म सन् १८९७ में जबलपुर में हुआ था और निधन १९ सितंबर, १९६६ को हुआ। विरासत से प्राप्त साहित्यिक और कलात्मक वातावरण के कारण उनमें साहित्य और कला के प्रति गहरी रुचि बचपन से ही विद्यमान थी। जीवन की विषम परिस्थितियों ने उनके साहित्यिक संस्कारों को उद्वेलित कर उन्हें साहित्य-सृजन की ओर प्रेरित किया। वैधव्य का दु:ख झेलते हुए जीवन और अस्तित्व की कईतरफा लड़ाई लड़ते हुए उन्होंने कलम उठा ली और अपने भीतर छिपे हुए साहित्यिक व्यक्तित्व को साकार रूप दिया।

बँगला में अपनी साहित्यिक चेष्टाओं को आगे बढ़ानेवाली उषाजी हिंदी साहित्य में कैसे पहुँचीं इसपर उनकी टिप्पणी है, 'बीमारी की दशा में मेरे हिंदी भाषी मित्र मुझे 'चंद्रकांता' आदि उपन्यास तथा कहानियाँ सुनाया करते थे। मुझे लगा कि हिंदी साहित्य अभी शिशु अवस्था में है तथा शब्दकोश क्षुद्र है। एक दिन मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' सुनाया। मैं प्रभावित हो उठी कि हिंदी साहित्य में भी कुछ है, खोज, सूक्ष्म दृष्टि भी है।''चुंबक की नाईं उस 'साकेत' ने मुझे प्रभावित कर लिया।'

'साकेत' से प्रभावित उषाजी ने हिंदी में लिखने का संकल्प लिये प्रेमचंद को पत्र लिखा कि वे हिंदी में आना चाहती हैं। उनसे प्रोत्साहन मिलने पर उन्होंने 'हंस' के लिए 'मातृत्व' कहानी भेजी। उत्तर में प्रेमचंद ने लिखा—'ऐसी दस कहानियाँ भी लिख दो तो हिंदी गल्प लेखकों में तुम्हारा स्थान सर्वोच्च हो जाएगा। यह शैली मुझे पसंद आई।' हिंदी में उषाजी की दूसरी कहानी 'सरस्वती' में छपी। प्रेमचंद और महावीरप्रसाद द्विवेदी का प्रोत्साहन पाकर उनकी प्रतिभा नई स्फूर्ति के साथ, नई चमक के साथ सामने आने लगी। हिंदी में लिखने का उनका क्रम अनवरत रूप से चल पड़ा। 'सरस्वती', 'चाँद', 'रूपाभ', 'वीणा', 'सारिका' जैसी पत्रिकाओं के महत्त्वपूर्ण पन्नों पर उनकी कहानियाँ स्थान पाने लगीं। कहानी लेखन के साथ उन्होंने उपन्यास लेखन में भी अपना कौशल दिखाया। उनकी प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं : **उपन्यास**—'वचन का मोल', 'पिया', 'जीवन की मुस्कान', 'पथचारी', 'सोहिनी', 'नष्टनीड़'। इसके अतिरिक्त उनका एक अन्य उपन्यास है— 'सम्मोहिता', यह बँगला से अनूदित है। **कहानी संग्रह**—'रात की रानी', 'नीम चमेली', 'महावर', 'आँधी के छंद', 'सांध्य पूरवी', 'मेघ मल्लार', 'रागिनी'।

उषाजी प्रेमचंद की तरह उपन्यास को जीवन का चित्र मानती थीं। जीवन-पथ पर आगे बढ़ते हुए जिन करुण, बीभत्स, भयानक आदि दृश्यों से उनकी भेंट हुई उनका एक अदृश्य स्पर्श उनके हृदय में अंकित होता चला गया। उन दृश्यों में से कठोर सत्य को निचोड़कर विश्लेषण द्वारा उसे तरह-तरह के रूपों में उन्होंने अपने उपन्यासों में प्रकट किया। जीवन की कठोर वास्तविकता उनके कथा संसार का महत्त्वपूर्ण अंग बनी। कभी जीवन संघर्षों से टकराते हुए तो कभी जीवन की रागात्मक परिस्थितियों में मनुष्य-मन में तरह-तरह के भावों का जो उद्वेलन उठता है, उसे उषाजी ने नए-नए संदर्भ देने की कोशिश की है। आकस्मिक घटनाओं और संयोगों के सहारे कथा को विस्तार देते हुए उनकी कोशिश पात्रों के मनोविज्ञान को समझने की रहती है।

उषाजी के कथा संसार का वैशिष्ट्य जीवन की वैविध्यमय अभिव्यक्ति है। उनकी कहानियाँ कहीं साधारण मनुष्य के जीवन और जगत् का सूक्ष्म निरीक्षण करती हुई उसके अंतर्मन को टटोलती हैं और कहीं मानव-मन की अतल गहराइयों में उतरकर संवेदना के मार्मिक तारों को झनझना देती हैं। मूलत: वे परिवार और नारी को केंद्र में रखकर सामाजिक समस्याओं और विषमताओं तक पहुँचती हैं। परंपरागत यातना और जीवन की जटिल परिस्थितियों के बीच संघर्षरत स्त्री की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ, उसके दु:ख-दर्द तथा उसके अंतर्मन का बारीक चित्रण उनकी कहानियों में उपलब्ध है।

अपने पर उषाजी की टिप्पणी

क-हा-नी, पढ़नेवाला शायद समय का मूल्य खो बैठते हैं, सो हानि उठाते हैं, यों तो हिंदी संसार का कथाकार सदा ही हानि उठाया करता है। क-हा-नी सो भी—'नी' स्वर-सप्तक का अंतिम स्वर है। हम कथाकारों का शायद न हो, परंतु इस अवस्था में तो मेरा कदाचित् उसी को लेकर व्यापार है।'

अपने कथा संसार में उषाजी ने कलापक्ष को वस्तुतत्त्व की ही तरह महत्त्वपूर्ण माना। उनका ध्येय था किसी भी एक वस्तु का चाहे वह कुत्सित, नग्न ही क्यों न हो, उसका रूप-सौंदर्य जीवन खोजकर सुसज्जित रूप में कला की सृष्टि करना। उनकी प्रशंसा में कहा जाता है कि उनकी रचनाओं में 'साज का-सा कसाव' है। लेकिन यह कसाव तब नकारात्मक रूप ले लेता है जब वह जीवन के सहज प्रवाह को तोड़ देता है। इस तरह की कहानियों में शिल्प के प्रति अतिरिक्त सजगता के कारण रचना की मूल संवेदना अपनी पूरी ऊर्जा और सहज आवेग के साथ सामने नहीं आ पाती। कहीं-कहीं भावना का अतिरेक भी उषाजी की कहानियों की कमजोरी बन जाता है; क्योंकि भावना के अतिरेक में वे गद्यकाव्य का सृजन करने लगती हैं। लय और तुक का समन्वित प्रवाह पाठक को काव्यात्मकता की हिलोरों में झुलाने लगता है, मगर जीवन की वास्तविकता दूर छिटक जाती है। इस तरह कभी शब्दाडंबर तो कभी भावावेग मूल कथानक को जटिल बना देता है। जिन रचनाओं में जीवन का सहज प्रवाह कलात्मक सजगता के पूर्वाग्रह और भावुकता के अतिरेक से मुक्त होकर बहा है उनमें जीवन का सच्चा साक्षात्कार कराने की क्षमता है। ऐसी रचनाएँ ही उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं जो हिंदी कथा साहित्य को नए विषय सौंपने के साथ-साथ नई शैली भी देती हैं।

नारी-मन की कोमलतम अनुभूतियों के चित्रांकन में नए-नए संदर्भों को सामने रखनेवाली उषाजी मृत्यु पूर्व व्यक्त अपनी अंतिम इच्छा में भी एक स्त्री की कोमल संवेदना के मार्मिक पक्ष को सामने रखती है—'मेरी सारी पुस्तकें मेरी चिता पर मेरे साथ जला दी जाएँ। मेरी शवयात्रा में शास्त्रीय संगीत निनादित हो।' □

एफ-९/जी, मुनीरका, डी.डी.ए. फ्लैट्स, नई दिल्ली-११००६७